राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस हेतु संदेश

प्रिय विद्यालय संचालक,

आपको नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं !

मृदा से संचारित कृमि संक्रमण (Soil Transmitted Helminths) भारत के लिए जन स्वास्थ्य का एक महत्वपूर्ण विषय है। देश में 1–14 वर्ष के लगभग 22 करोड़ बच्चों को आंत मे कृमि का खतरा होने का अनुमान हैं। बच्चों की आंत (पेट) में कृमि (कीड़े) संक्रमण के बहुत से हानिकारक प्रभाव है जैसे खून की कमी (एनीमिया), कुपोषण, भूख न लगना, थकान और बेचैनी, मल में खून आना, पेट में दर्द, मितली, उल्टी और दस्त आना। साक्ष्य सिद्ध करते है कि उपरोक्त सभी समस्याओं के निराकरण के लिए कृमि नियंत्रण एक प्रभावी उपाय है। बच्चों को कृमि नियंत्रण के सीधे फायदे खून की कमी में सुधार और बेहतर पोषण स्तर है जबकि अनुमानित फायदों में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में मदद, विद्यालय और आंगनबाड़ी केन्द्रों में उपस्थिति तथा सीखने की क्षमता में सुधार, भविष्य में कार्यक्षमता और औसत आय में बढ़ोतरी शामिल है। निश्चित समयांतराल पर डिवर्मिंग करने से कृमि संक्रमण के फैलाव को रोका जा सकता है।

कृमि मुक्ति कार्यक्रम के विगत चार चरणों की भांति इस वर्ष भी राज्य सरकार द्वारा 10 फरवरी 2017 को राज्य के सभी आंगनबाड़ी केन्द्रों और राजकीय एवं निजी विद्यालयों में 1 से 19 वर्ष के सभी बच्चों के लिए राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस (नेशनल डिवर्मिंग डे) आयोजित किया जायेगा। जो बच्चे बीमार होने या अनुपस्थित रहने के कारण 10 फरवरी को दवाई (एलबेन्डाजॉल 400 मि.ग्रा.) नहीं ले पाएं उन्हें यह दवाई मॉप अप दिवस (15 फरवरी) पर दी जायेगी। इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु आपसे निम्नलिखित सहयोग अपेक्षित है:

- कार्यक्रम के आयोजन से पूर्व अभिभावक–शिक्षक बैठक में बच्चों के माता–पिता को कृमि नियंत्रण के महत्त्व को बताना और उन्हें बच्चों को 10 फरवरी को विद्यालय में कृमि नियंत्रण की दवाई खिलाने के लिए प्रेरित करना।
- एक सप्ताह पूर्व से प्रतिदिन अध्यापक प्रार्थना–सत्र में और पढ़ाते समय विद्यालय में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस की जानकारी बच्चों को दें तथा 10 फरवरी 2017 को उपस्थित होने के लिए आग्रह करें।
- कृमि नियंत्रण के महत्त्व और कार्यक्रम से संबंधित महत्त्वपूर्ण सूचना को नोटिस बोर्ड पर लगाएं ताकि सभी उसे पढ़ पाएं।
- विद्यालय के SMS पोर्टल का उपयोग करके राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस से पहले बच्चों के माता–पिता को कार्यक्रम से संबंधित सूचना बताने और जागरूकता पैदा करने के लिए SMS भेजना।
- विद्यालय की वेबसाईट पर कार्यक्रम संबंधित सूचना को प्रदर्शित करना।
- बच्चों की कार्यक्रम में भागीदारी बढ़ाने और उनमें जागरूकता पैदा करने के लिए कृमि नियंत्रण विषय पर प्रश्नोत्तरी, चित्रकला, नारा लेखन, भाषण, आदि गतिविधियां आयोजित करना।

आपसे आशा है कि कार्यक्रम में प्रभावी योगदान करके राज्य के 2 करोड़ बच्चों हेतु बेहतर स्वास्थ्य एवं भविष्य निर्माण मे सहयोग करेंगे!

सधन्यवाद !

कालीचरण सराफ
चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री
राजस्थान सरकार